



DR. RATAN CHANDRA KAR

Dr. Ratan Chandra Kar, retired. Chief Medical Officer, has served Andaman and Nicobar Health Services from 1988 to 2022, serving across the length and breadth of Islands. He was pioneer in medical intervention to Jarawa tribe and also established an eco-friendly Jarawa ward for medical assistance.

2. Born on 04th May, 1954 at Ghatal, Midnapore, West Bengal, Dr. Kar received his M.B.B.S Degree from Nil Ratan Sircar Medical College, Kolkata in 1981. Post MBBS, he has served in Nagaland to provide medical care to the people of Konyak Tribe and also to the Jawans of Assam Rifles, 26 Bn while posted in Tripura.

3. Dr. Kar joined the services of Andaman and Nicobar Administration in the month of September 1988. During the year 1998, he was posted as Medical Officer, Primary Health Centre, Kadamtala, Andaman and Nicobar. It was during his tenure as Medical Officer here, he came in contact with Jarawas and despite initial resistance from them, he was successful in winning over their confidence and trust. During the measles outbreak of 1999 among Jarawas, he along with his team were able to save the tribes from the verge of extinction and he has been popularly known as “Jarawas Ke Jeevan Data”. It was because of his pioneering medical care and intervention, population of Jarawas has increased from 255 in 1999 to 560 plus as on date.

4. Dr. Kar has also served as Deputy Director (Tribal Health and Welfare), Andaman and Nicobar Administration from 2006 to 2011 and Executive Secretary, Andaman Aadim Jan Jaati Vikas Samiti (AAJVS) in 2009. He has been instrumental in devising and formulating medical care policies of Jarawas, Onges and Shompen Tribes.

5. Dr. Kar has documented his experience and covered some unknown facts of Jarawas Tribes in his book titled “Andamaner Aadim Jan Jaati Jarawa” (Bengali) and “The Jarawas of the Andaman” (English). He has also authored books on Cellular Jail and history of Andaman Penal Settlement.

6. In recognition of his love, compassion and distinguished medical service towards the Jarawa Tribe, on 26th January, 2000, Dr. Kar was conferred the Hon'ble Lt. Governor's Commendation Certificate.



डॉ. रतन चंद्र कर

डॉ. रतन चंद्र कर, सेवानिवृत्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी, ने 1988 से 2022 तक अंडमान और निकोबार स्वास्थ्य सेवा विभाग में कार्य करते हुए पूरे द्वीपसमूह में सेवा की है। उन्होंने जारवा जनजाति के लिए चिकित्सा सेवा में अग्रणी भूमिका निभाई और चिकित्सा सहायता के लिए एक पर्यावरण-अनुकूल जारवा वार्ड की भी स्थापना की।

2. 04 मई, 1954 को घटल, मिदनापुर, पश्चिम बंगाल में जन्में, डॉ. कर ने 1981 में नील रतन सरकार मेडिकल कॉलेज, कोलकाता से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की। एमबीबीएस के बाद, उन्होंने नागालैंड में कोन्याक जनजाति के लोगों की चिकित्सा सेवा की है और त्रिपुरा में तैनात रहते हुए असम राइफल्स की 26वीं बटालियन के जवानों की भी सेवा की।

3. डॉ. कर सितंबर, 1988 में अंडमान और निकोबार प्रशासन सेवा में शामिल हुए। वर्ष 1998 में, उन्हें अंडमान और निकोबार के कदमतला के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सा अधिकारी नियुक्त किया गया। यहां चिकित्सा अधिकारी के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, वह जारवाओं के संपर्क में आए और उनके शुरुआती प्रतिरोध के बावजूद, वह उनका विश्वास और भरोसा जीतने में सफल रहे। 1999 में जारवाओं में खसरे के प्रकोप के दौरान, वह अपनी टीम के साथ जनजातियों को विलुप्त होने के कगार से बचाने में सफल रहे और उन्हें “जारवा जनजाति के जीवन दाता” के रूप में जाना जाता है। उनकी उत्कृष्ट चिकित्सा देखभाल और प्रयासों के कारण ही जारवाओं की आबादी 1999 में 255 से बढ़कर आज 560 से अधिक हो गई है।

4. डॉ. कर ने 2006 से 2011 तक अंडमान और निकोबार प्रशासन के उप निदेशक (आदिवासी स्वास्थ्य और कल्याण) और 2009 में अंडमान आदिम जन जाति विकास समिति (एएजेवीएस) के कार्यकारी सचिव के रूप में भी काम किया है। उन्होंने जारवाओं, ओंगेस और शोम्पेन जनजातियों की चिकित्सा देखभाल नीतियां बनाने में महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन किया है।

5. डॉ. कर ने अपने अनुभव को लिपिबद्ध किया है और अपनी पुस्तक “अंडमानेर आदिम जन जाति जारवा” (बंगाली) और “द जारवास ऑफ द अंडमान” (अंग्रेजी) में जारवा जनजाति के कुछ अज्ञात तथ्यों को उजागर किया है। उन्होंने सेलुलर जेल और अंडमान दंड बंदोबस्त के इतिहास पर पुस्तकें भी लिखी हैं।

6. जारवा जनजाति के प्रति उनके प्रेम, करुणा और विशिष्ट चिकित्सा सेवा का सम्मान करते हुए, 26 जनवरी, 2000 को, डॉ. कर को माननीय उपराज्यपाल के प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।